विषयानुक्रम

प्रकाशकीय निवेदन : ६
सक्षेपमें : श्रीसुशील : ८
दो शब्द · श्रीगोपी-
नाथजी गुप्त : १२
निदर्शन · श्री प.
सुखलालजी : १३
१ भारतीय दर्शनोंमें जैन
दर्शनका स्थान : ३
२ जैन दृष्टिसे ईश्वर : २७
३ जैन दर्शनमें कर्मवाद : ६१
४ जैन विज्ञान : ७७
विज्ञान—जड विज्ञान,
पुद्गल : ८०
धर्म, अधर्म : ८१
आकाश, काल : ८२
जीव : ८३
प्राणविद्या, आत्मविद्या,
चेतना : ८४
उपयोग, दर्शन : ८५
ज्ञान, मति, (शुद्ध)
मति : ८६
अवग्रह, ईहा : ८७
अवाय, धारणा, स्मृति : ८८
सज्ञा : ८९
चिंता, अभिनिबोध : ९०
श्रुतज्ञान : ९२
लब्धि, भावना,
उपयोग, नय : ९३
नैगम, सग्रह, व्यवहार,
ऋजुसूत्र : ९४
शब्द, समभिरूढ,
एवभूत : ९५
स्याद्वाद : ९६
द्रव्य : ९८
द्रव्य, गुण, पर्याय : ९९
अवधि, मन:पर्यव,
केवलज्ञान : १००
जीव, अजीव, आश्रव : १०१
बध, सवर, निर्जरा : १०२
मोक्ष, मोक्षमार्ग,
सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान : १०३
सम्यक् चारित्र,
उपसहार : १०४
५ जीव : १०६
६ जीव—२ : १३०
एक प्रकारके जीव : १३१
दो प्रकारके जीव : १३४
तीन प्रकारके जीव : १३७
चार प्रकारके जीव : १३८

७ भगवान् पार्श्वनाथ : १५५

८ महामेघवाहन महाराजा खारवेल : १८१

९ खारवेलके शिलालेखका भाषानुवाद (श्री. प. सुखलालजी कृत) : २०४

१० जैनोंका कर्मवाद (२) : २१०

कर्मकी प्रकृति : २११

कर्मकी स्थिति : २३०

कर्मका अनुभाग : २३२

कर्मका प्रदेशबन्ध : २३३

कर्मके आश्रव-कारण : २३३

कर्मका विपाक : २३९

११ जैन दर्शनमें धर्म और अधर्मतत्त्व : २४४

धर्म : २४४

अधर्म : २५४

श्रीचारित्र स्मारक ग्रन्थमालाके कुछ उपयोगी ग्रन्थ

श्वेताम्बर-दिगम्बर—दोनों फिरकोंका मतैक्य दरसाते शास्त्रपाठोंका संग्रह व उनका प्रमाणभूत अवलोकन। मूल्य—देढ रुपया।

धर्मबिन्दु—धर्मके मूल विचारोंका स्पष्टीकरण करनेवाला सूत्रात्मक ग्रन्थ व उसका विवेचन। मूल्य—चार रुपया।

जैन परंपरानो इतिहास—भ. महावीरस्वामीसे वि. सं. १००० तकका जैन श्रमण-परंपरा, राजा-महाराजा, मंत्री-महामंत्री, श्रावक-श्राविका, गण-गच्छ, तीर्थ-महातीर्थ, शास्त्र-साहित्य आदिका शृंखलाबद्ध इतिहास। (छप रहा है)

श्रीचारित्र स्मारक ग्रन्थमाला

ठि श्री. चन्दुलाल लखुभाई परीख

मांडवीकी पोलमें नागजीभूधरकी पोल, अहमदाबाद (गुजरात)